# सत्ता का विरोध महंगा पड़ रहा है जिया परिवार को

नवभारत टाइम्स
दिल्ली
5.12.89

जनरल जिया-उल-हक के परिवार को सेना की ओर से मिला निवास स्थान खाली करना ही पड़ा। जनरल जिया के परिवारवालों ने बेनजीर सरकार से आग्रह किया था कि जब तक उनका अपना मकान बन नहीं जाता, उन्हें रहने दिया जाए। लेकिन पाक रक्षा मंत्रालय ने इस आग्रह को नामंजूर कर दिया और पिछले सप्ताह जारी अपने आदेश में कहा कि जनरल जिया के परिवार को हर हालत में सेना का मकान खाली करना होगा चाहे उनका अपना मकान बनकर तैयार हुआ हो या नहीं।

रावलपिंडी के छावनी इलाके में स्थित इस मकान में जिया का परिवार १९७६ से रह रहा है जब उनकी सेनाध्यक्ष के रूप में पदोन्नति हुई थी। राष्ट्रपति बनने और मार्शल लॉ लागू करने के बाद भी जनरल जिया इसी मकान में रहे और इस्लामाबाद स्थित राष्ट्रपति भवन में नहीं गए।

पिछले वर्ष १७ अगस्त को जनरल जिया बहावलपुर के नजदीक विमान दुर्घटना में मारे गए लेकिन उस समय सरकार ने उनके शोक संतप्त परिवार को सेना का मकान खाली करने को मजबूर नहीं किया।

नए सेनाध्यक्ष जनरल असलम बेग ने वायदा किया कि सेना जनरल जिया के परिवार के लिए एक नया मकान बनवाएगी और उन्हें उपहार के रूप में देगी तथा सेना वाले मकान को संग्रहालय बना दिया जाएगा।

लेकिन, जनरल जिया के परिवार के लोगों ने अपने लिए स्वयं मकान बना लेना बेहतर समझा और शुरू भी कर दिया गया जो अभी अधूरा है। लेकिन इस बीच सेना में ही इस बात को लेकर कानाफूसी शुरू हो गई कि जनरल जिया के परिवार को किस हैसियत से इतने दिनों तक सेना का मकान मिला हुआ है।

जिया के परिवार के अनुसार मकान खाली करने का उन्हें कोई लिखित आदेश प्राप्त नहीं हुआ था। सम्बद्ध अधिकारी मौखिक रूप से ही बार-बार कहते रहे। इनका कहना है कि अधिकारियों ने उन्हें २४ घंटे के अंदर मकान खाली करने को कहा था लेकिन कुछ प्रभावशाली व्यक्तियों के कहने पर कुछ और समय दिया गया। फिर भी मकान तो छोड़ना ही था, तत्काल वे सब विपक्षी नेता चौधरी शुजाअत हुसैन के रावलपिंडी स्थित निवास स्थान पर चले गए हैं।

११ वर्षों तक देश की कमान थामे रहनेवाला जनरल जिया का सेना का वह मकान अब खंडहर जैसा लग रहा है। कुछ समय पहले गोरैयों को भी इस मकान के नजदीक से गुजरने में दहशत होती थी, अब हमेशा उनकी पंचायत बैठी रहती है। ट्रकों में लदकर तकरीबन ५० बड़े-बड़े बक्से ले जाते हुए जनरल जिया के सबसे बड़े पुत्र एजाज-उल-हक ने कहा कि इन बक्सों में उनके पिता की किताबें हैं। मकान के चारों ओर खड़े आस पास के लोगों ने तमाशाई की तरह जिया के परिवार को अन्य सामान के अलावा उनकी तस्वीरें, उनके निजी उपयोग के सामान और उनकी तारीफ में लिखी गई नज्में फ्रेम करते हुए देखा। कुछ लोगों ने पैकिंग में सहयोग भी दिया।

जिया की बेवा बेगम शफीका गुमसुम और उदास-सी एक किनारे खड़ी सब कुछ देख रही थीं जो उनके नये और अस्थायी निवास पर जा रहा था। मानसिक रूप से विकलांग जिया की सबसे छोटी पुत्री पूरी पैकिंग प्रक्रिया के दौरान उसी कमरे में बैठी रही, जिसमें वे सोया करते थे। जिया अपनी इस पुत्री को बेहद प्यार करते थे, विदेश यात्रा के दौरान भी वह उनके साथ रहती थी।

एजाज-उल-हक रक्षा मंत्रालय के इस व्यवहार पर बड़े क्षुब्ध हैं लेकिन उन्हें किसी की हमदर्दी नहीं चाहिए और इसलिए आदेश के अनुरूप ही सब कुछ कर रहे हैं लेकिन उन्हें इस बात का दुख अवश्य है कि सरकार अपने वादे से मुकर गई और निर्धारित समय से पहले उन्हें निकाल बाहर कर दिया।

पाकिस्तान पीपुल्स पार्टी की सरकार अपने रक्षा मंत्रालय पर काफी समय से सेना का वह मकान खाली करवाने को दबाव डाल रही थी। एजाज विपक्षी मुस्लिम लीग में शामिल होकर विमान दुर्घटना की जांच के लिए हल्ला मचाने लगे थे जो उनकी नजर में वह सुनियोजित षड्यंत्र था। यह बात बेनजीर सरकार को बड़ी नागवार लग रही थी। सेना के कुछ अधिकारी भी इस तरह की जांच की मांग से खफा थे।

शशिधर खां